जीने का मतलब - माँ

कहीं कहीं एक माँ और बेटा रह रहा था। बेटा का नाम अरुण था। अरुण एक छोटा बच्चा था। वह अपने माँ से बहुत प्यार करता था। माँ भी अरुण से बहुत प्यार करते थे। जब अरुण छोटा था, उसके पिताजी एक ऐक्सिडेंट में मर गया। अब माँ और अरुण, दादाजी के साथ रह रहा है। पिताजी के मरने के बाद घर का सभी कार्य माँ को ही संभालना था। माँ किसी भी काम करने केलिए जाने को तैयार था। वह चाहती थी कि, अरुण स्कूल जाकर अच्छे से पढ़ें और उसका जो सपना डॉक्टर बनना वह पूरी हो जाए। अरुण को स्कूल जानना बहुत पसंद था, इसलिए माँ किसी भी काम केलिए जाने को तैयार थे। माँ अरुण से बहुत प्यार करते थे। अरुण जो भी चाहते थे, वह सब माँ उसे देती थी। माँ उसे कभी भी दुःख में नहीं देख सकती थी। वह अरुण से उतना प्यार करते थे। अरुण भी माँ से बहुत प्यार करते थे। उसको पता था कि उसका सपना पूरा करने केलिए ही माँ सभी काम केलिए जा रही है। अरुण ने अपने माँ केलिए, उसका जो सपना था डॉक्टर बनना पूरा करने का तय लेता है।

कुछ वर्षों के बाद, जब अरुण पन्द्रह साल का था, दसवीं कक्षा में पढ़ते समय उसके स्वभाव में बहुत अलग हो रही थी

अरुण बिना कुछ कारण से माँ से लड़ते थे। माँ जो भी उसके खुशी केलिए कर रही है, उसमें भी कुछ आरोप बताते थे। माँ को अरुण कि यह अवहेलना सह न सकी थी। वह बहुत दुःख हो रही थी। फिर भी, माँ कभी अरुण को कुछ बोला नहीं, वह अरुण से बहुत प्यार करते थे।

फिर भी, कुछ वर्ष ऐसे ही था, लेकिन एक दिन अरुण का जो सपना था 'डॉक्टर बनना' वह पूरा हुआ। अरुण को एक अच्छे आसपताल में काम करने का अवसर मिला। मुंबई में वो आसपताल है। इसलिए अरुण माँ को छोड़कर जाने का फैसला लिया। अरुण कभी भी माँ को अपने दोस्तों से मिलने नहीं देते थे। वह, इसलिए था कि माँ कि एक आँखे नहीं है। अरुण माँ के बारे में सोचती भी नहीं थी। लेकिन, माँ हमेशा उसके बारे में सोचते थे।

माँ बहुत कमज़ोर हो रही थी। उसे अरुण का ~~आश्रय~~ याद आती थी। माँ कि हालत बहुत कमज़ोर हो गयी। वह मर गयी। यह बात बताने केलिए उनके सहपाठियों ने उसे एक पत्र भेजा। फिर भी, अरुण अपने माँ को एक आँखिरि बार तक नहीं आया। वह अपने जीवित, उसके खुशी से जी रही थी। अरुण सिर्फ अपने खुशी के बारे में सोचती थी, किसी ओर चीज़ कि नहीं। अरुण अपने सुख के बारे में ही बस सोचती थी, माँ के बारे में

अरुण कभी सोचती ही नहीं। लेकिन कुछ सालों के बाद अरुण को अपने गलती का इहसास हो गया। वह घर जाने ~~का~~ के बारे में सोचने लगी और एक दिन अपने गाँव पर, अपने घर पर अरुण आया, लेकिन घर में कोई नहीं था। अरुण अपने माँ के प्यार के बारे में सोचा माँ कि यादों में वो फस गया। उसके करते हुए गलतियों पर वह बहुत निराश हो गया। वह बहुत रोकर माफ़ी माँगने लगी। उसे पता था कि माँ उसे माँफ करूँगी। वो भी अपने दिल से....

~~बहुत~~ कुछ दिनों के बाद, अरुण अपने माँ केलिए, उसकी खुशी केलिए, एक प्रतिज्ञ लिया कि अरुण सभी माँ केलिए, जो ऐसे कमज़ोर पढ़कर अकेली जी रही है, ~~उसकी~~ उनके संरक्षण करूँगा। हमें, अपने ~~सभी~~ खुशी के बारे में नहीं सोचना चाहिए, किसी ओर कि खुशी देखने केलिए हमें जीना चाहिए।

हाथ मिलाकर, सबकी खुशी केलिए काम करते हैं।
अपने जीवित का मतलब दृढ़ता है....

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)